SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सुमन

(32 वां वार्षिक पत्रिका 2025)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), तमिलनाडु

संदेश

"सुमन" केवल पत्रिका नहीं बल्कि संवैधानिक कर्तव्यों व अंतर्निहित दायित्वों के सफल व दृढ़ निर्वाहन - राजभाषा कार्यान्वयन- का ही भाग है। गृहपत्रिका इसी अनुपालन का प्रतिबिंब है। अतः ई-पत्रिका "सुमन" के लिए बहुमूल्य योगदान प्रदत्त सभी पदधारी बधाई के पात्र है । आशा है कि राजभाषा की प्रगतिशीलता का प्रमाण बनकर "सुमन" अनवरत रूप से ज़ारी रहेगी । पत्रिका परिवार को भी इसकी सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

संपादकीय

"सुमन" के 32 वें ई-अंक को आपको समर्पित करते हुए मुझे अपार खुशी हो रहा है । आशा है कि सरकारी कार्यवहन में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग, प्रचार - प्रसार एवं प्रोत्साहन के लिए यह गृहपत्रिका यथासंभव योगदान देने के साथ-साथ दक्षिण भारत की ओर से हिंदी के उत्साहपूर्ण मनोभाव एवं राजभाषा में अपनत्व को दर्शाएगी । राष्ट्रीय एकता का मूर्तीभाव हिन्दी इस पत्रिका के माध्यम से और पल्लवित एवं पुष्पित होगी, ऐसी मेरी कामना है । लेखकों एवं पत्रिका-परिवार को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएं ।

व उप महालेखाकार/प्रशासन

सहायक निदेशक (राजभाषा) की लेखनी से.......

सुश्री षिबी. टी. मांजूरान

भाषा चिर-परिवर्तनशील है। संपर्क का साधन होते हुए भी भाषा संस्कृति का संरक्षण कर उसे संपन्न बनाए रखने का संसाधन है।संस्कृत भाषा का लोप इसी बात की स्थापना करते है। संस्कृत के साथ हमारी तत्कालीन संस्कृति का भी लोप हो गया था।

संपर्क भाषा, चिर परिवर्तनशील एवं “विकास” मार्ग पर चलती, मिश्रण के अधीन होकर प्रगतिपूर्ण पथ पर अविरल आगे बढ़ती रहती है। मातृभाषा व्यष्टि-निर्भर, जन्मस्थलीय पृष्ठभूमि पर आधारित होकर भी जिस-किसी भाषा भाषी के संपर्क में आए ,उस अनुसार बदलती है। राष्ट्रभाषा, देश एवं समाज की संस्कृति एवं ऐतिहासिक जाल में जूझकर परिवर्तन की आदी हो जाती .. फिर भी राष्ट्रीयता, देशभक्ति, देशगरिमा आदि का पहचान-विशेष बनकर रहती है। राजभाषा-सरकारी गतिविधियों, शासकीय प्रयोजनों,भाषा विदों,भाषा के संभालनेवालों..... के हाथों उलझकर इसके बंधनों को स्वीकारते हुए दृढता से आगे बढ़ती है। अतः बोली से राजभाषा तक आते-आते गत्यात्मकता व परिवर्तनशीलता कम होती दिखाई पड़ती है।

संपर्क भाषा, मातृभाषा या राष्ट्रभाषा से हट कर राजभाषा तक आते-आते परिवर्तन का स्तर, स्थिरता के निकट पहुँचता है । सरकारी काम-काज में आयोग द्वारा निर्मित और सरकार द्वारा स्वीकृत पदों, शब्दों एवं नामों सहित शब्दावलियों से काम लेना अनिवार्य है। राष्ट्र के दैनिक कार्य सरकारी कामकाज से, तदस्वरूप विकास से जुड़े कि राजभाषा भारत वर्ष के विकास में अड़चन के बिना, भाषाई-अहम से परे, एकरूपता के सूत्र में बंधकर तत्द्वारा राष्ट्र के विकास में भागीदार बनें ।
जय हिन्दी...। जय हिन्द...।

पत्रिका परिवार

मार्ग दर्शक
श्री . डी . जयशंकर
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -1)

परामर्शदाता
श्री . पृथ्वीपाल सिंह कानावत
व उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक
सुश्री षिबी. टी. मांजूरान, सहायक निदेशक
सहायक निदेशक (राजभाषा)

अभिकल्पना और मनोनयन
संजीव कुमार, डी ई ओ

प्रत्याख्यान: इस गृहपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में जितने विचार हैं वह केवल रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। इसलिए इन्हें सृजनात्मकता की दृष्टि से पढ़ने की कृपा करें । रचनाओं की मौलिकता का दायित्व भी रचनाकारों का ही है ।

अनुक्रमणिका

1	**टेमीरतउ में जीवन**	राधिका सुनील, स. पर्यवेक्षक
2	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 -परिवर्तनकारी कदम**	रवि कुमार II, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
3	**अपने मन की बात कहें**	जे. पुष्कला, व लेखापरीक्षा अधिकारी
4	**नियमित व्यायाम**	जे. पुष्कला, व लेखापरीक्षा अधिकारी
5	**जीवन अनमोल है**	रोशन कुमार, स लेखापरीक्षा अधिकारी
6	**नया सवेरा**	दिनेश चंद मीना ,व लेखापरीक्षक
7	**कल्याण-कारी - गतिविधियां**	
8	**वृक्ष हमारे भगवान**	अनुजकुमार पंडित , स लेखापरीक्षा अधिकारी
9	**कौन हो तुम**	शैलेंद्र कुमार, स लेखापरीक्षा अधिकारी
10	**ऐसा कब कहा था**	रजनीकान्त यादव, स लेखापरीक्षा अधिकारी
11	**लक्ष्य के प्रति समर्पण**	शैलेंद्र कुमार, स लेखापरीक्षा अधिकारी
12	**आँखों की गुस्ताखियां**	मुकुंद माधव भारती,डी ई ओ
13	**भक्त की गरिमा**	मुकुंद माधव भारती,डी ई ओ

टेमिरतऊ में जीवन

राधिका सुनील, स. पर्यवेक्षक

तातारस्तान की तैनाती की कहानी तो पिछली बार मैने सुनाई थी उसके बाद, मेरे पति को कजाकिस्तान में टेमिरतऊ नामक स्थान पर तैनात किया गया था जो कजाकिस्तान के करगांडा क्षेत्र में नूरा नदी के तट पर एक उपग्रह शहर है। शहर का नाम कजाख से "लौह पर्वत" के रूप में अनुवादित है। करगांडा कोयला बेसिन के विकास के कारण शहर और इसके औद्योगिक भवनों का निर्माण शुरू हुआ। टेमिरतऊका पूरा शहर इस्पात संयंत्र के चारों ओर घूमता था, जिसे पहले करमेट स्टील प्लांट के नाम से जाना जाता था, जिसे लक्ष्मी मित्तल द्वारा ले लिया गया था और बाद में इसे आर्सेलर मित्तल टेमिरतऊ स्टील प्लांट के रूप में जाना जाने लगा। 2023 में इसे कजाख सरकार ने वापस ले लिया है।

मैंने 1998 की गर्मियों में पहली बार कजाकिस्तान का दौरा किया था। उन दिनों हमें एअरोफ़्लोत में मास्को के लिए उड़ान भर, वहाँ से अस्ताना के लिए उड़ान भरनी पड़ती थी। वहां से कार से टेमिरतऊ जाना पड़ता था, जो तीन से साढ़े तीन घंटे का सफर था। वैकल्पिक रूप से, कोई दिल्ली से अल्माटी जा सकता है और करगांडा के लिए प्रोपेलर उड़ान ले सकता है। अस्ताना से टेमिरतऊ तक की यात्रा संस्कृतिपरक झटका था;

चौड़े, खाली हरे मैदान, केवल कभी-कभार चरने वाले जानवरों, विशेष रूप से घोड़ों और गायों के साथ, मुझे भय और अलगाव की भावना के साथ छोड़ दिया। चेन्नई जैसे भीड़ भरे शहर में पले-बढ़े होने के बाद, विरल परिदृश्य ने मुझे डर और अकेलेपन की भावना दी जैसे कि मैं अज्ञात में अतिचार कर रही थी। जैसे ही मैं टेमिरतऊ के पास पहुंची , स्टील प्लांट की चिमनियों को भूरे, काले और यहां तक कि हरे धुएं से बाहर निकलते हुए देख सकता था। जैसे ही हम शहर में चले गए, वास्तुकला समान रूप से अलग थी, जिसमें वर्दी, जंग के रंग की सोवियत शैली की इमारतें, बड़ी कम्युनिस्ट-युग की लोहे की मूर्तियां और निवासियों को गर्म पानी पहुंचाने वाले बड़े पाइप थे।

मेरे परिवार और मैं ने इस्पात होटल में लगभग तीन महीने बिताए, इससे पहले कि हमें आखिरकार एक फ्लैट मिल गया। यह क्लासिक रूसी जगह थी, जो वॉलपेपर और पारंपरिक फर्नीचर के साथ पूरी हुई थी। रसोई पहली बार में चुनौती थी क्योंकि इसमें गैस बर्नर के बजाय इलेक्ट्रिक हॉट प्लेट्स थे जिनका उपयोग हम चेन्नई में उपयोग में थे। हमने एक रूसी महिला को घर का काम करने के लिए काम पर रखा और पता चला कि वह वास्तव में एक नर्स थी - बेरोजगारी संकट का दुखद संकेत जिसने शिक्षित लोगों को चाकरी की नौकरियों पर ले जाया था। एक बार, हमारे मकान मालिक, जो कज़ाख थे, ने हमें अपने घर पर आमंत्रित किया। उनका परिवार बहुत दोस्ताना था, और एक बात वास्तव में मेरे साथ अटक गई: उनकी डेढ़ साल की बेटी चार साल की बच्ची की तरह दिखती थी और अपने दम पर एक पूरा सेब खा लेती थी, कुछ ऐसा जो मैंने कभी किसी बच्चे को भारत में इतने करीने से करते नहीं देखा था। मैंने यह भी देखा कि बच्चों ने सात साल की उम्र में बहुत बाद में औपचारिक स्कूली शिक्षा शुरू की, और अपने दिन बाहर खेलने में बिताए।

टेमिरटाऊ एक ऐसा शहर है जहां विभिन्न जातीय समूह, जैसे कि कज़ाख और रूसी, सौहार्दपूर्ण रूप से सह-अस्तित्व में हैं। कज़ाख लोग, जिनकी विशिष्ट मंगोलिक विशेषताएं हैं, कज़ाख, एक तुर्क भाषा बोलते हैं। हालाँकि, रूसी उस क्षेत्र के निवासियों के बीच संचार के लिए मुख्य भाषा थी जहाँ हम रुके थे। देश के इतिहास के बारे में एक दिलचस्प तथ्य यह है कि नूरसुल्तान नज़रबायेव 27 साल तक कजाकिस्तान के राष्ट्रपति थे।

मुझे सभी मौसमों के दौरान तिमिरताऊ जाने का अवसर मिला। गर्मी एक जीवंत समय था। शहर की सड़कें, पार्क और दुकानें अच्छी तरह से तैयार लोगों के साथ हलचल कर रही थीं, खासकर सप्ताहांत पर। महिलाओं ने स्टाइलिश कपड़े पहने और धूप का आनंद लेने के लिए हल्के कपड़े पहने, ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि उन्होंने अपने सुंदर कपड़े और ध्यान से लगाए गए मेकअप के साथ किसी फैशन पत्रिका से बाहर कदम रखा हो। शरद ऋतु एक अलग तरह की सुंदरता लेकर आई। शहर ने नारंगी रंग ले लिया क्योंकि पत्तियां गिर गईं और पार्कों और रास्तों को कवर किया। लोगों की पोशाक बदल गई, सभी ने ठंडे मौसम के अनुकूल होने के लिए गर्म कपड़े पहने। सर्दी एक चरम अनुभव था, तापमान कभी-कभी शून्य से 40 डिग्री सेल्सियस नीचे तक गिर जाता था। पूरा शहर सफेद रंग में लिपटा हुआ था, और शहर के कार्यकर्ता लगातार सड़कों से बर्फ के टीले साफ कर रहे थे। कारों को फिसलने से रोकने के लिए, वे सड़कों पर नमक और मिट्टी का मिश्रण फैलाएंगे। सभी कार मालिकों के लिए एक महत्वपूर्ण शीतकालीन अनुष्ठान सर्दियों के टायरों पर स्विच करना था, जिसने बर्फीली सड़कों पर बेहतर पकड़ प्रदान की।

शहर में सभी घरों को गर्म रखने के लिए अनूठी और कुशल प्रणाली थी। बिजली संयंत्र ने पूरे शहर में चलने वाले बड़े पाइपों के नेटवर्क के माध्यम से गर्म, गैर-पीने योग्य पानी की आपूर्ति की। इस गर्म पानी को तब हर घर और अपार्टमेंट में लोहे के रेडिएटर के माध्यम से प्रसारित किया गया था। पाइप और रेडिएटर में सुसंगत दबाव बनाए रखा गया था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पूरे शहर को ठीक से गर्म किया गया हो - केंद्रीकृत प्रणाली जो पूर्व सोवियत संघ की पहचान थी।

आबादी मुख्य रूप से महिला प्रतीत होती है, जिसमें महिलाएं पूरे शहर में विभिन्न कार्य करती हैं, जिसमें सड़क की सफाई और संचालन ट्राम शामिल हैं। यह जनसांख्यिकीय असंतुलन एक विषम लिंग अनुपात का परिणाम था, जो संभवतः पिछले युद्धों में महत्वपूर्ण संख्या में पुरुषों के नुकसान के कारण हुआ था।

जैसा कि मैं टेमिरतऊ में बस गई , मैंने देखा कि शहर ओलंपिक आकार के स्विमिंग पूल, स्कूलों, बाजारों आदि के साथ एक विशाल खेल परिसर के साथ काफी आत्मनिर्भर था। शहर का अपना टीवी स्टेशन भी था जो स्थानीय समाचार और कार्यक्रम दिखाएगा। सप्ताहांत के दौरान करगांडा की यात्रा जरूरी थी क्योंकि यह विशाल मॉल और कई मनोरंजन स्थानों के साथ अधिक आधुनिक था। शादियां केवल सप्ताहांत के दौरान हुईं। जोड़े जाकर सिविल रजिस्ट्रेशन ब्यूरो में अपनी शादी का रजिस्ट्रेशन कराएंगे। उसके बाद, जोड़े अपने परिवारों के साथ सार्वजनिक स्थानों पर अपनी शादी की तस्वीरें लेते थे, इससे पहले कि शहर के स्मारकों और फव्वारे उनकी शादी की पोशाक में तैयार हों। उसके बाद वे पूरी रात पार्टी करने के लिए होटल या निजी स्थान जैसे निर्दिष्ट स्थान पर जाते थे।

कभी-कभी स्टील प्लांट के कर्मचारी "सामल" के हेल्थ रिसॉर्ट में जाते थे, जो टेमिरतऊ के पास था, जहाँ मैं कई बार गया था। रिसॉर्ट के अंदरूनी हिस्सों ने विशिष्ट रूसी रिसॉर्ट की शैली में एक झलक प्रदान की। कभी-कभी, हम ट्रेकिंग और बारबेक्यू आउटडोर जाने के लिए "कार्कालिंस्क" नामक एक अलग स्थान की यात्रा करेंगे। मुझे "बोरोवोय" नामक एक अद्भुत और मनोरम स्थान की यात्रा करने का अवसर मिला, जो कज़ाख मैदानों का एक नखलिस्तान है जो तिमिरताऊ से लगभग 300 किलोमीटर दूर है। बोरोवॉय के बारे में कई किंवदंतियां और कहानियां हैं। "जब परमेश्वर संसार की सृष्टि कर रहा था, तो राष्ट्रों में से एक को जंगलों से समृद्ध भूमि मिली, दूसरे को बड़ी नदियों के साथ उपजाऊ खेत मिले, और तीसरे को सुंदर पहाड़ और नीली झीलें मिलीं। लेकिन कज़ाख केवल पंख-घास के मैदान के साथ समाप्त हो गया। इससे वह नाराज हो गया और उसने भगवान से उसे कुछ प्राकृतिक सुंदरता प्रदान करने के लिए कहा। परमेश्वर ने अपने कोरझिन (बैग) से पहाड़ों, चट्टानों, सुंदर देवदार और पर्णपाती जंगलों, शुद्ध पानी के साथ नीली झीलें, और घास और फूलों से ढके पन्ना खेतों को लिया और उन्हें असीम सीढ़ियों में भरपूर हाथ से फैलाया। यह बोरोवॉय की उपस्थिति थी; कजाकिस्तान में सबसे सुरम्य स्थानों में से एक, जो अपनी सुंदरता और पहाड़ों, जंगलों, झीलों और अद्वितीय वनस्पतियों और जीवों के दुर्लभ हार्मोनिक संयोजन के लिए काव्यात्मक नाम "कजाकिस्तान का मोती" प्राप्त किया।

मेरे पति 10 साल की अवधि के लिए टेमिरतऊ में रहे, और मैं हर साल एक महीने के लिए छुट्टी लेती थी, कभी-कभी दो, और उस जगह का दौरा करती थी। मेरे आने के एक दशक में, शहर हमेशा आकर्षक बना रहा, और मैंने जगह और रूसी लोगों दोनों के लिए एक शौक विकसित किया था ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक परिवर्तनकारी कदम

रवि कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

भारत की शिक्षा प्रणाली लंबे समय से संरचनात्मक, पाठ्यक्रमीय और मूल्यांकन संबंधी सुधारों की माँग कर रही थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020, जो कि 34 वर्षों के अंतराल के बाद लागू की गई है, शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक परिवर्तन का प्रतीक है। यह नीति पूर्ववर्ती राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की तुलना में अधिक समावेशी, लचीली और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुकूल है।

पुरानी शिक्षा नीति बनाम नई शिक्षा नीति

क्षेत्र	पुरानी नीति (1986)	नई नीति (2020)
शैक्षणिक संरचना	10+2 प्रणाली	5+3+3+4 प्रणाली (आधारभूत से माध्यमिक स्तर तक)
पाठ्यक्रम विभाजन	विज्ञान, वाणिज्य, कला जैसे कठोर विभाजन	कोई कठोर विभाजन नहीं; छात्र अपनी रुचि के अनुसार विषय चुन
शिक्षा की भाषा	अंग्रेज़ी और हिंदी प्रमुख	प्राथमिक स्तर तक मातृभाषा/ स्थानीय भाषा में शिक्षा
मूल्यांकन पद्धति	वार्षिक परीक्षा आधारित	सतत मूल्यांकन, 360-डिग्री रिपोर्ट कार्ड
शिक्षक प्रशिक्षण	पारंपरिक बीएड	4-वर्षीय समेकित B.Ed. अनिवार्य (2030 तक)
उच्च शिक्षा संरचना	कठोर डिग्री संरचना	बहु-विकल्पीय एंट्री/एग्जिट प्रणाली, क्रेडिट बैंक

छात्रों पर प्रभाव

1. सीखने की प्रक्रिया में सुधार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों को रटने के बजाय सोचने, विश्लेषण करने और समझने की शक्ति पर ज़ोर देती है। इससे उनकी रचनात्मकता, समस्या-समाधान कौशल और आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी।

2. पाठ्यक्रम की लचीलापन

अब छात्र एक साथ गणित और संगीत जैसे विषयों का अध्ययन कर सकते हैं। इससे उनकी रुचियों के अनुसार सीखने की स्वतंत्रता मिलती है और करियर विकल्पों का दायरा बढ़ता है।

3. डिजिटल शिक्षा का विस्तार

ऑनलाइन शिक्षा, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, और डिजिटल लाइब्रेरी जैसी सुविधाएँ दूरदराज के छात्रों को गुणवत्ता युक्त शिक्षा से जोड़ेंगी।

4. भाषा आधारित समावेशन

प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होने से छात्र अभिव्यक्ति और संप्रेषण में अधिक सहज होंगे। इससे सीखने की गति तेज़ होगी और ड्रॉपआउट दर घटेगी।

प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव

1. नया 5+3+3+4 संरचना

यह संरचना बच्चे की उम्र के अनुसार विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखती है:

i. 5 साल की आधारभूत अवस्था (आंगनवाड़ी + कक्षा 1-2): खेल, गतिविधियों, कहानी-कथन और अनुभव आधारित शिक्षा पर बल।

ii. 3 साल की तैयारी अवस्था (कक्षा 3-5): भाषायी और गणितीय कौशल निर्माण।

iii. 3 साल की मध्य अवस्था (कक्षा 6-8): परियोजना आधारित, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कशक्ति विकास।

iv. 4 साल की माध्यमिक अवस्था (कक्षा 9-12): बहुविषयक विकल्प, कौशल आधारित शिक्षा और करियर उन्मुखी तैयारी।

2. कोडिंग और व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत

कक्षा 6 से ही कोडिंग और व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत छात्रों को तकनीकी दक्षता और रोज़गार-योग्यता प्रदान करेगी।

3. निपुण भारत मिशन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत “निपुण भारत मिशन” प्रारंभ किया गया है, जिसका उद्देश्य कक्षा 3 तक सभी बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता सुनिश्चित करना है।

4. समान शिक्षा का अधिकार

सरकारी और निजी स्कूलों के बीच की गुणवत्ता की खाई को पाटने के प्रयास किए गए हैं। एक साझा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) के माध्यम से सभी छात्रों को समान अवसर प्रदान किए जाएंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक सुधार, लचीलापन, वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयारी, और समावेशिता लाने का एक व्यापक प्रयास है। यह नीति केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह छात्रों को जीवन कौशल, शोध क्षमता, और रोजगार के लिए उपयुक्तता के साथ तैयार करने पर ज़ोर देती है।

उच्च शिक्षा पर मुख्य प्रभाव

1. बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली

अब सभी विश्वविद्यालयों को बहु-विषयक संस्थान में बदला जाएगा जहाँ विज्ञान, कला, वाणिज्य, प्रौद्योगिकी, आदि विषयों का समावेश होगा। छात्रों को अपने पसंदीदा विषयों को चुनने की स्वतंत्रता होगी, जिससे रुचि आधारित सीखने को प्रोत्साहन मिलेगा।

2. डिग्री कार्यक्रमों में लचीलापन

3 या 4 साल की स्नातक डिग्री के विकल्प होंगे। Multiple Entry-Exit System: छात्र बीच में कोर्स छोड़कर Certificate या Diploma लेकर बाहर जा सकते हैं और भविष्य में फिर से उसी स्थान से पढ़ाई जारी रख सकते हैं। Academic Bank of Credits (ABC): छात्रों के अर्जित क्रेडिट को डिजिटल रूप में संग्रहित किया जाएगा।

3. गुणवत्ता और स्वायत्तता

उच्च शिक्षण संस्थानों को स्वशासन (Autonomy) दी जाएगी जिससे वे पाठ्यक्रम, प्रवेश और मूल्यांकन में नवाचार कर सकें।

संस्थानों को तीन श्रेणियों में बाँटा जाएगा:

1. शिक्षण विश्वविद्यालय
2. शोध-प्रधान विश्वविद्यालय
3. स्वायत्त डिग्री प्रदान करने वाले कॉलेज

शोध को बढ़ावा

राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ)की स्थापना की जाएगी ताकि उच्च शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान को बढ़ावा मिले।छात्र और शिक्षक दोनों को अनुसंधान के लिए धन और मार्गदर्शन मिलेगा।

5. भाषा और समावेशन

उच्च शिक्षा में भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाएगा। सभी छात्रों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए, आर्थिक रूप से कमजोर और पिछड़े वर्गों को वित्तीय सहायता और शैक्षणिक समर्थन दिया जाएगा।

6. विश्वविद्यालयों की संख्या में पुनर्गठन

भारत में मौजूदा 40,000 से अधिक कॉलेजों की गुणवत्ता में सुधार लाकर उन्हें अल्पकालिक संबद्धता प्रणाली से मुक्त किया जाएगा। 2040 तक, सभी कॉलेजों को स्नातक डिग्री प्रदान करने वाले स्वायत्त संस्थान बनाने का लक्ष्य है।

7. वैश्विक शिक्षा के साथ समन्वय

विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में शाखाएं खोलने की अनुमति दी जाएगी। इससे छात्र बिना देश छोड़े विश्वस्तरीय शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा को रोज़गार योग्य, अनुसंधानपरक, समावेशी और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने का प्रयास है। इसके लागू होने से छात्रों को अपनी पसंद से विषय चुनने और करियर गढ़ने की स्वतंत्रता मिलेगी। संस्थानों को अधिक स्वायत्तता और उत्तरदायित्व मिलेगा। उच्च शिक्षा प्रणाली में गुणवत्ता, नवाचार और अनुसंधान की संस्कृति विकसित होगी। यह नीति भारत को ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था और वैश्विक शिक्षा केंद्र बनने की दिशा में आगे बढ़ाएगी।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 न केवल एक शिक्षा सुधार दस्तावेज़ है, बल्कि यह भारत के भविष्य निर्माण की नींव भी है। यह छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी, रचनात्मक, नैतिक और सामाजिक रूप से जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इस नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए सरकार, शिक्षकों, अभिभावकों और समाज के सभी वर्गों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। यदि सही ढंग से लागू किया गया, तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत को ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में बदलने की क्षमता रखता है।

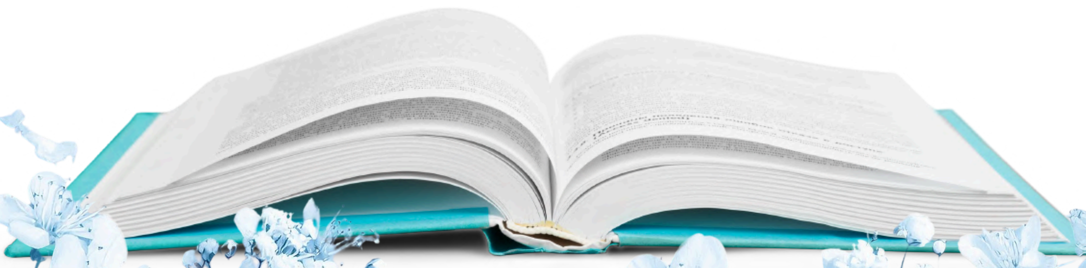

अपने मन की बात कहें

जे. पुष्कला, व लेखापरीक्षा अधिकारी

हाल ही में, मैं अपनी बेटी के जन्मदिन के लिए दान देने, एक वृद्धाश्रम गयी थी। तभी एक बुज़ुर्ग महिला ने मुझे बुलाया और कहा, "आप जैसे कई लोग यहाँ पैसे, खाना और कपड़े दान करते हैं। लेकिन अगर आप हमारे साथ कुछ समय बिता सकें, तो हमें खुशी होगी..."

उनके अनुरोध को स्वीकार करते हुए, मैं एक रविवार दोपहर वृद्धाश्रम गयी और वे बहुत खुश और प्रसन्नचित्त थे। उसके बाद, मैं और अपने कुछ दोस्त हर रविवार को उनके साथ कुछ घंटे बिताने लगे।

हमने उन्हें उस स्थान की सफाई, फूल और सब्जियां उगाने, बेसहारे बच्चों के लिए 'ट्यूशन' लेने, अंताक्षरी, पल्लानकुष़ी, दायम (तमिलनाडु का एक प्रसिद्ध खेल), और योग करने जैसी गतिविधियों में भी उन्हें शामिल किया।

हमने उनके जीवन में घटित घटनाओं का नाटकीय रूपांतर किया, उन्हें अभिनय करने को प्रोत्साहित किया और दूसरों को उनका आनंद लेने का मौका दिया।
हमें यह जानकर खुशी हुई कि इससे उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

उनकी जॉँच करने आए डॉक्टर ने हमारी प्रशंसा करते हुए कहा, "यह सिद्ध तथ्य है कि जब बुजुर्ग लोग दूसरों से बात करते हैं, तो उनकी खुशी दोगुनी हो जाती है। दुख गायब हो जाता है।"

आइए हम सब अपने घरों या पड़ोस में वरिष्ठ नागरिकों से बात करने और उनका मनोरंजन करने में कुछ समय व्यतीत करें !

नियमित व्यायाम

जे. पुष्कला, व लेखापरीक्षा अधिकारी

पिछले साल मैंने एक मानसिक स्वास्थ्य विकास कक्षा में दाखिला लिया। कई बेहतरीन कौशल सिखाए जाने वाली यह एक अद्भुत कक्षा थी । मेरे साथ एक 65 वर्षीय महिला भी उस कक्षा में नामांकित थी। यह कक्षा हर शाम एक घंटे की होती थी। महिलाएँ स्वयं महिलाओं को व्यायाम के विविध तरीके सिखाती थीं, हमें अच्छी सलाह देती थीं और सही रास्ता दिखाती थीं। मेरे लिए वह एक अच्छा अनुभव रहा।

चार महीने तक लगातार कक्षा में उपस्थित रहकर अनवरत व्यायाम करने के पश्चात, मैंने अपनी बेटी की पढ़ाई और सांस की सेहत को ध्यान में देखते हुए, कक्षा छोड़ने का फैसला किया। उनके द्वारा सिखाए गए व्यायाम भी मैंने समय का बहाना देकर बंद कर दिए। इसके परिणामस्वरूप, न केवल मैंने कक्षा के दौरान जो ऊर्जा प्राप्त की थी उसे खो दिया, बल्कि प्रेरणा भी खो दी। इतना ही नहीं, पहले जो शारीरिक बीमारियाँ थीं, वे भी वापस आने लगी हैं।

हाल ही में मेरी मुलाक़ात अपनी कक्षा में एक बुज़ुर्ग महिला से हुई। उसकी शारीरिक योग्यता और सक्रिय जीवनशैली को देखने के बाद, मुझे उन दिनों की याद आने लगी जब मैं भी ऐसी ही थी।

व्यायाम करने से हमारी हड्डियाँ और मांसपेशियाँ मज़बूत होती हैं। हम रक्तचाप और रक्त शर्करा के स्तर को कुछ हद तक नियंत्रित कर सकते हैं। शरीर का वजन नियंत्रण में रहने के अलावा, शरीर लचीला और हल्का हो जाता है - जिसके परिणामस्वरूप रात में गहरी नींद आती है।

व्यायाम के सभी लाभों को समझने के बावजूद, समय की कमी के कारण इसे बंद करने पर मुझे गहरा अफसोस हुआ।

नव वर्ष में लिए जाने वाले संकल्प की तरह हिन्दी दिवस पर व्यायाम को पुनः प्रारंभ करने का संकल्प लेने की योजना बनाई हूँ, तथा इसीको नये साल का संकल्प भी मानूंगी।

जीवन अनमोल है।

रोशन कुमार, स लेखापरीक्षा अधिकारी

कुछ लम्हों को शब्दों में ढालना आसान नहीं होता, और कुछ बातें ऐसी होती हैं जो कहे बिना रहा भी नहीं जाता।।

हम सबने वो पल देखे हैं —बचपन की वो मासूम यादें, स्कूल की शरारतें, नानी का घर, वो गर्मी की छुट्टियाँ...
लेकिन आज की इस भागती दौड़ती ज़िंदगी में, हम इतने आगे निकल आए हैं कि वो सारे सुनहरे पल कहीं पीछे छूट गए। जब हम जन्म लेते हैं, तो रेंगते हुए चलते हैं, धीरे-धीरे खड़े होते हैं, और फिर दौड़ने लगते हैं —एक ऐसी दौड़, जो कभी रुकती नहीं। हम इतना दौड़ते हैं कि भूल जाते हैं कि किस लिए दौड़ रहे हैं। आज का इंसान अपनी खुशियाँ भूलकर कल की चिंता में डूबा है। सब कुछ है उसके पास, फिर भी सुकून नहीं।

लोग अब दूसरों से तुलना करने लगे हैं: “मेरा दोस्त मुझसे आगे क्यों निकल गया?” “वो मुझसे ज़्यादा खुश क्यों है?”
ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा और बेचैनी — यही आज की असलियत बन गई है। लेकिन मित्रों, **रामराज की कल्पना करें** — जहाँ प्रेम था, करुणा थी, सहयोग था। आज उस भावना की फिर से ज़रूरत है। हमें फिर से इंसानियत को याद करना होगा।
इसलिए मैं आपसे सिर्फ़ एक बात कहना चाहता हूँ:
“जो पल है, जो क्षण है — उसी में जीवन का असली आनंद है।“ एक पुराना गीत है, शायद आपने भी सुना होगा:

“आने वाला पल जाने वाला है, हो सके तो इसमें ज़िंदगी बिता दो...
पल जो ये जाने वाला है”

तो क्यों न हम भी हरेक क्षण को पूर्णता से, खुले दिल से जिएं ? भविष्य की चिंता में वर्तमान को ना खोएँ। जिनके साथ हैं माता-पिता, मित्र, रिश्तेदार उन्हें समय दीजिए, प्रेम दीजिए। क्योंकि अंत में, कुछ भी साथ नहीं जाता। जब इंसान इस दुनिया से जाता है, तो अकेले ही जाता है

"आया दो पैरों पर, गया चार कंधों पर।" तो आइए...आज से, अभी से, इस पल से हर दिन को ऐसे जिएँ जैसे यह आख़िरी हो।

"जियो तो हर पल ऐसे जियो, जैसे कि आख़िरी हो।"

नया सवेरा

दिनेश चंद मीना, व लेखापरीक्षक

धीरे-धीरे चलता गया,
आसमान के रंगों में ढलता गया।
सुनहरी किरणों से अलविदा कहता,
सागर की लहरों में खुद से बहता।

क्षितिज पर ठहर गया एक क्षण को,
मानो सोच रहा हो अगले गगन को।
क्या कल फिर चमकूंगा यूँ ही?
या बदल जाएगा कुछ उस बादल की
बूंदों से कहीं?

ना कोई शोर, ना कोई शिकवा,
बस मौन में लिपटा उसका विदा-वर्णन।
जैसे दिन ने चुपके से कह दी बात,
कि थक गया हूँ, अब लेनी है रात।

पंछी लौट चले अपने घोंसले की ओर,
धरती ने ओढ़ ली चाँदनी की चादर घोर।
पर सूरज की लालिमा ने कहा –
"मैं ढलता हूँ, पर मिटता नहीं कभी यहाँ।"

हर अंत में छुपा है एक नया सवेरा,
हर ढलती किरण में बसता है सविनय सवेरा।
जो समझे इस ढलान की बात,
वही जी पाए जीवन की असली सौगात।

"इस दुनिया में रहने वाले सभी लोगों के लिए एक बेहतर दुनिया बनाना आपके हाथ में है।"

– नेल्सन मंडेला

नई पहलों और सद्प्रवृत्तियों का संग्रह – "सुशासन की दिशा में उत्प्रेरक"

आज के गतिशील कार्य परिवेश में, कर्मचारी कल्याण और कल्याण गतिविधियाँ केवल भत्तों से बढ़कर फलती-फूलती कार्यालय संस्कृति के आवश्यक घटक बन गए हैं। ये पहल बुनियादी लाभों से आगे बढ़कर, कर्मचारियों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और यहाँ तक कि वित्तीय कल्याण के लिए समग्र दृष्टिकोण को शामिल करती हैं। सुशासन की दिशा में, यह संगठन व्यापक कल्याण ढाँचे को तेज़ी से प्राथमिकता दे रहा है। ऐसा करके, इसका उद्देश्य, सहायतापूर्ण और आकर्षक कार्यस्थल बनाना है, जो न केवल स्वस्थ कार्यबल को बढ़ावा दे, बल्कि उत्पादकता, मनोबल और समग्र कार्य संतुष्टि को भी बढ़ाए। यह प्रतिबद्धता अंततः सभी के लिए अधिक लचीला, उत्प्रेरित और सफल संगठन के रूप में योगदान है।

कल्याण प्रकोष्ठ इस कार्यालय में बेहतर कार्यप्रणाली जारी रखने में सक्रिय रहा है, और उठाए गए कदम नीचे सूचीबद्ध हैं।

अवलोकन:-

1. कर्मचारी स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम - अस्थि रोग शिविर, नेत्र जागरूकता शिविर (चेन्नई, मदुरै और पुदुचेरी शाखा), श्रवण यंत्र जागरूकता शिविर और पीएफटी शिविर
2. मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम
3. समारोह और कार्यक्रम - अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह, योग दिवस समारोह से संबंधित गतिविधियाँ।
4. लेखा परीक्षा दिवस 2024
5. अन्य गतिविधियाँ - बैंक मेला, को-ऑप्टेक्स द्वारा परिसर-बिक्री और जेल बाजार

अच्छी कल्याण गतिविधियों का कार्यान्वयन:-

1. कर्मचारी स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम: -

- 06.11.2024 को 7वीं मंजिल स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में सुबह 10.00 बजे से शाम 5.00 बजे तक निःशुल्क अस्थि-रोग शिविर आयोजित किया गया। शिविर का संचालन पार्वती अस्पताल, चेन्नई द्वारा किया गया था। कुल शिविर में कुल 170 अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया और लाभान्वित हुए। शिविर में मुख्य रूप से अस्थि मज्जा घनत्व (बीएमडी) और रक्तचाप एवं रैंडम रक्त शर्करा (आरबीएस) की जाँच पर ध्यान केंद्रित किया गया और हड्डी रोग विशेषज्ञ से परामर्श भी लिया गया।

- डॉ. अग्रवाल नेत्र चिकित्सालय, चेन्नई द्वारा 03.12.2024 को नेत्र शिविर आयोजित किया गया था और मुख्य रूप से नेत्र-दाब परीक्षण, परीक्षण सेट और नेत्र जांच के लिए ऑटो रिफ्रैक्टोमीटर पर ध्यान केंद्रित किया गया था। चेन्नई कार्यालय के कुल 175 अधिकारियों/कर्मचारियों ने शिविर का लाभ उठाया। नेत्र शिविर से मोतियाबिंद और अन्य नेत्र समस्याओं का शीघ्र पता लगाने में मदद मिली।

- डॉ. अग्रवाल नेत्र चिकित्सालय द्वारा मदुरै शाखा कार्यालय में 10.01.2025 को एक और नेत्र शिविर आयोजित किया गया और कुल 59 अधिकारियों/कर्मचारियों ने शिविर में भाग लिया और इसका लाभ उठाया। नेत्र शिविर से मोतियाबिंद और अन्य नेत्र संबंधी समस्याओं का शीघ्र पता लगाया जा सका।

03.01.2025 को पुडुचेरी शाखा कार्यालय में। पुडुचेरी के माननीय उपराज्यपाल श्री के. कैलाशनाथन को आमंत्रित करके इस नेत्र शिविर का भव्य आयोजन किया गया, जिन्होंने समारोह का उद्घाटन किया। श्री के.पी. आनंद, पीएजी (ऑडिट-II), श्री ए. नेदुनचेझियान, उपराज्यपाल के सचिव, पुडुचेरी और श्री पी. सुगेंद्रन, सीनियर डीएजी कार्यालय पीएजी (ऑडिट-II) ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। शिविर का संचालन डॉ. अग्रवाल नेत्र चिकित्सालय, पुडुचेरी द्वारा किया गया था। कुल 38 अधिकारियों और कर्मचारियों ने शिविर में भाग लिया और लाभ उठाया।

- 11.03.2025 को 7वीं मंजिल स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में सुबह 10:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक एक निःशुल्क श्रवण यंत्र जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। शिविर का संचालन श्रवण यंत्र केंद्र, चेन्नई द्वारा किया गया था। कुल 106 अधिकारियों और कर्मचारियों ने शिविर में भाग लिया और लाभ उठाया। शिविर ने कर्मचारियों में श्रवण स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा की और उन्हें पेशेवर जाँच के माध्यम से किसी भी श्रवण दोष का शीघ्र पता लगाने का अवसर प्रदान किया।

- 13.03.2025 और 14.03.2025 को 7वीं मंजिल स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में सुबह 10:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक निःशुल्क पल्मोनरी फंक्शन टेस्ट (पीएफटी) शिविर आयोजित किया गया। यह शिविर कावेरी अस्पताल, चेन्नई द्वारा संचालित किया गया था। कुल 204 अधिकारियों और कर्मचारियों ने शिविर में भाग लिया और लाभान्वित हुए। शिविर के दौरान पल्मोनरी फंक्शन टेस्ट (पीएफटी) की जाँच, सामान्य चिकित्सक से परामर्श और ऊँचाई व वज़न की जाँच पर ध्यान केंद्रित किया गया।

2. मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम:-

- जागरूकता बढ़ाने और अवसाद, व्यसन, चिंता, तनाव, कम आत्मसम्मान, वैवाहिक समस्याओं आदि जैसी मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान के लिए, किसी भी दवा का सेवन शुरू करने से पहले, प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डॉ. प्रभाकरन द्वारा एक व्याख्यान-सह-संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया। एक आध्यात्मिक वैज्ञानिक, शोध मनोवैज्ञानिक, रचनात्मक सम्मोहन चिकित्सक, तंत्रिका भाषाई चिकित्सक, सफलता व्यवसायी और कॉर्पोरेट प्रशिक्षक, 24.04.2024 को 01.30 बजे से AGORC हॉल, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), चेन्नई के कार्यालय में आयोजित किया गया। चेन्नई के सभी लेखा परीक्षा कार्यालयों के कर्मचारी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

3. समारोह और कार्यक्रम:-

- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 07.03.2025 (शुक्रवार) को दोपहर 02.30 बजे से शाम 05.00 बजे के बीच “ऑडिट भवन” तेनाम्पेट, चेन्नई-18 के 7वें तल स्थित मीटिंग हॉल में मनाया गया। कर्मचारियों को यह अवसर प्राप्त हुआ।

3 मार्च से 7 मार्च, 2025 तक आयोजित होने वाले अनगिनत खेलों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान तनावमुक्त होने और आनंद लेने के लिए, कर्मचारी समारोह में शामिल हुए।

वास्तव में एक आरामदायक और आकर्षक माहौल बनाने के लिए, समारोह में कई तरह के आकर्षण प्रस्तुत किए गए। कर्मचारी फैशन ज्वेलरी और एक्सेसरीज़ की पेशकश करने वाले स्टॉल देख सकते थे, जबकि सुचिराम फूड्स जैसे गैर-सरकारी संगठनों ने स्वस्थ भोजन के विकल्प उपलब्ध कराए (जिनकी आय ऑटिस्टिक बच्चों की मदद के लिए थी) और सेवालय ने खरीद के लिए अनूठे उत्पाद उपलब्ध कराए (सभी आय बेसहारा बच्चों और बुजुर्गों को दान कर दी)।

5 मार्च, 2025 को लेखिकाओं सुश्री गीता इलंगोवन और सुश्री निवेदिता लुइस की एक पुस्तक स्टॉल ने कर्मचारियों की बौद्धिक जिज्ञासा को भी बढ़ाया। 6 मार्च, 2025 को, "रिवर्सल ऑफ़ रोल्स" के एक मंचन ने एक विचारोत्तेजक अनुभव प्रदान किया, जिसने गहन चिंतन को प्रेरित किया। कार्यालय के भीतर रचनात्मक प्रतिभाएँ कर्मचारियों के मनमोहक नृत्य प्रदर्शन के साथ चमक उठीं, जिसने सभी की सराहना बटोरी। कार्यक्रम की गहन जानकारी को और बढ़ाते हुए, मुख्य अतिथि सुश्री जेन प्रसाद, सुश्री गीता इलंगोवन और सुश्री निवेदिता लुइस ने विचारोत्तेजक भाषण दिए, जो सभी उपस्थित लोगों के दिलों को छू गए।

महिला कर्मचारियों के अमूल्य योगदान को स्वीकार करने और उनकी सराहना करने के लिए, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह के एक भाग के रूप में सभी महिला कर्मचारियों को विशेष रूप से स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। इस पहल ने उनके समर्पण को मान्यता दी और कार्यालय में कृतज्ञता की भावना को बढ़ावा दिया।

- 18 जून से 21 जून, 2024 तक, कार्यालय ने 10वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया, जिसका उद्देश्य योग के बारे में जागरूकता फैलाना और कर्मचारियों के स्वास्थ्य और दैनिक जीवन में इसके महत्व को सक्रिय रूप से प्रदर्शित करना था। "श्रीमती लीना शशि ने एक ध्यान सत्र का नेतृत्व किया, जबकि शिवानंद योग आश्रम की श्रीमती महालक्ष्मी ने योग पर एक व्याख्यान और प्रदर्शन प्रस्तुत किया, जिससे कर्मचारियों को अपने जीवन को बेहतर बनाने में मदद मिली।"

4. लेखापरीक्षा दिवस 2024: -

- लेखापरीक्षा दिवस सप्ताह 2024 दिनांक 18.11.24 से 25.11.24 तक मनाया गया। लेखापरीक्षा सप्ताह के दौरान चेन्नई स्थित सभी आईएएडी कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए और इस कार्यालय के अधिकारियों ने निम्नलिखित कार्यक्रमों में सहायता प्रदान की। महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), चेन्नई कार्यालय के एजीओआरसी हॉल में रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 25.11.24 को लेखापरीक्षा दिवस मनाने के लिए खुले सभागार में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

5. अन्य गतिविधियाँ: -

- दिनांक 11.09.24 को सुबह 10:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक चेन्नई स्थित सभी आईएएंडएडी कार्यालयों के लाभार्थ 6 राष्ट्रीयकृत और 3 निजी बैंकों तथा हमारे डाकघर के एक बैंक मेले में अपने उत्पादों और योजनाओं का प्रदर्शन किया गया। श्री डी. जयशंकर, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) ने समारोह का उद्घाटन किया। यह आयोजन IA&AD कार्यालयों के इतिहास में पहला बैंक मेला था। कर्मचारियों ने विभिन्न योजनाओं/उत्पादों की तुलना की और सर्वोत्तम सौदे प्राप्त किए। मेले में 291 से अधिक लोग आए।

- त्यौहारी सीज़न के अवसर पर, पीएजी (ए&ई) कार्यालय स्थित इस कार्यालय के ओपन-एयर ऑडिटोरियम में 30.12.24 और 31.12.24 को दो दिनों के लिए प्रातः 11:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक को-ऑप्टेक्स के उत्पादों की कैम्पस सेल आयोजित की गई थी। यह सेल पीएजी (एयू-II), डीजीए (केंद्रीय), पीएजी (एयू-I), पीएजी (ए&ई) और आरसीबी&केआई, चेन्नई के कार्यालयों के कर्मचारियों के लाभार्थ आयोजित की गई थी। कैम्पस सेल को कर्मचारियों से बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली और दोनों दिनों में कुल 2,64,985/- रुपये की बिक्री दर्ज की गई।

- राज्य सरकार की पहलों को गति देने और जेल में बंद कैदियों की सहायता के लिए, इस कार्यालय द्वारा 22.04.24 से 26.04.24, 09.09.24 और 14.10.24 तक जेल बाजार का आयोजन किया गया, जहाँ कैदियों द्वारा जेल में बनाए गए उत्पादों की बिक्री की गई। जेल विभाग द्वारा बेचे जाने वाले उत्पाद कैदियों द्वारा बनाए जाते हैं ताकि रिहाई के बाद कैदी आजीविका कमा सकें, अपराध की ओर न लौटें और सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें।

निष्कर्ष: एक समृद्ध कार्यस्थल संस्कृति:-

निष्कर्षतः कल्याण प्रकोष्ठ द्वारा की गई सक्रिय पहल जीवंत और सहयोगी कार्यस्थल को बढ़ावा देने में सहायक रही है। विविध प्रकार की आकर्षक और मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन करके, इन गतिविधियों ने न केवल कर्मचारियों के कल्याण के लिए बहुमूल्य अवसर प्रदान किए, बल्कि एक अधिक गतिशील और सकारात्मक कार्यालय वातावरण बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। ये प्रयास कर्मचारियों के समग्र कल्याण के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं, जो समर्पित कर्मचारी-केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से सुशासन के सिद्धांतों के अनुरूप हैं, और अंततः अधिक संबद्ध, स्वस्थ और ऊर्जावान कार्यबल का निर्माण करते हैं।

"वृक्ष : हमारे भगवान"

अनुजकुमार पंडित, स लेखापरीक्षा अधिकारी

आओ, मैं तुम्हें अपने भगवानसे मिलाताहूँ;
आओ, मैं तुम्हें अपनी माँ से मिलाता हूँ;
आओ, मैं तुम्हें वृक्ष से मिलाता हूँ—
जो हमें जीवन देती है, भोजन देती है,
औषधि देती है, छाँव देती है,
फल देती है, और श्वासके लिएप्राण
वायुदेती है।

आओ, मैं तुम्हेंअपने भगवानसे मिलाताहूँ
जो हमारी धरती माताकी रक्षा करती है,
हमारे लिए वर्षा लाती है, नदी-झरनों को
जीवन देती है, पक्षियों को घर देती है,
जानवरों को आसरा देतीहै।

आओ, मैं तुम्हें अपने भगवान से मिलाता हूँ
जो कटने के बाद भी हमारे काम आती है,
जो कटने केबाद भी हमें भोजन देती है,
जो कटने केबाद भी हमें औषधि देती है,
और अपनी लकड़ी, छालऔर पत्तों से,
हमारे घर बनाती है, किताबें रचती है, और
आग तक जलाती है।

हेपार्थ, तुम जिस भगवान को सदियों से
ढूँढ रहे हो, उनका वजूद ही पेड़ में हैं।
हे पार्थ, अपने भगवान को पहचानो —
हमारा अस्तित्व उनसे है, और उनका
अस्तित्व हमसे है।

इसलिए, हे पार्थ, अपने लिए,
और अपनों के लिए,
वृक्ष की रक्षा करो,
नए वृक्ष लगाओ,
और धरती को हरा-भरा बनाओ।

कौन हो तुम

शैलेंद्र कुमार, स लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रतिबिंबित हो तुम शब्दों में
अनजान- अनाम – सी एक छवि
इस शाम की नीली चादर में
तन्हा-तन्हा दिल एक कवि।

ख्वाबों की कुर्बत सच की दूरी
भला जानता कौन उन्हें?
मालूम नहीं घड़ियाँ सतरंगी
बुनती क्यों अनचाहे लम्हे?

लहरों - सा उद्वेलित मन
सागर-तट से टकराता है
शंख – सीपियाँ यादों की बन
ठहर वहीं रह जाता है।

कतरा- कतरा दिल घुलता है
पिघली यादों के साये में
पतझड़ का मौसम आता क्यों
सूखे शजरों के काये में।

ऐसा कब कहा था

रजनीकान्त यादव, स लेखापरीक्षा अधिकारी

कही वीरान रातों में टकरातें मुझसे
ज़िंदगी वीरान करने को किसने कहा था
मुझे अफ़सोस रहेगा फिर कभी अकेले ना
सोने का
हर रात बस सपने में ही आए ऐसा कब
कहा था

दिल को तसल्ली होती थी तुझसे मिलके
ज़िंदगी भर राह तकूँ ऐसा कब कहा था
मेरी तबियत खुश थी बस नैन मटक कर
प्यार में अंधा ही कर दोगी ऐसा कब कहा था

ज़रूरत के मुताबिक़ तालुकात रख लेती मुझसे
ये आख़िरी सलाम करने को किसने कहा था
आज तेरी ना मौजूदगी सबूत है मेरे सब्र का
तू किसी और की हो जाए ऐसा भी तय ना हुआ था
कही वीरान रातों में टकरातें मुझसे
ज़िंदगी वीरान करने को किसने कहा था

लक्ष्य के प्रति समर्पण

शैलेंद्र कुमार, स लेखापरीक्षा अधिकारी

अक्सर देखने में आता है कि योग्य तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति प्रायः निर्बल होते हैं। उनकी निर्बलता यह होती है कि वे अपनी योग्यता को किसी एक बिन्दु पर केन्द्रित नहीं कर पाते। सफलता और असफलता में यही अन्तर है।

"निरंतर प्रयत्न और दृढ़ विश्वास से कठिनाइयाँ भी लजा जाती है और असम्भव भी संभव में परिवर्तित हो जाता है।"

"साहस मत छोडों, आशावान को सहायता देने के लिए सैकड़ों अवसर और क्रांतियाँ आती है। शर्त यही है कि जुटे रहो।"

यदि समस्त योग्यता को एक ही उद्देश्य की ओर लगाया जाए तो सफलता के चरम बिन्दु तक पहुँचा जा सकता है। ठीक इसके विपरीत बहुमुखी प्रतिभा और योग्यता को किसी एक कार्य में केन्द्रित न किया जा सके तो उसका कुछ भी परिणाम नहीं निकलता। हालांकि किसी एक उद्देश्य के प्रति समर्पित व्यक्ति को आजकल सनकी कहकर उपहास उड़ाया जाता है। जबकि सत्य यह है कि जिन महान व्यक्तियों ने संसार में उल्लेखनीय परिवर्तन किए, मानव की सभ्यता को नई दिशा दी, वे जीवनपर्यन्त एक ही उद्देश्य के प्रति समर्पित रहे।

सभ्यता के इस युग में किसी एक विषय के विशेषज्ञ व्यक्ति को ही मान्यता प्राप्त होती है। वही अपने आस-पड़ोस तथा देश-विदेश में उस विषय का विशेषज्ञ माना जाने लगता है। पर यह तभी होता है जब वह व्यक्ति एक लक्ष्य पर कार्य करता है। इससे सिद्ध होता है कि जिस व्यक्ति का कोई निश्चित लक्ष्य नहीं, निश्चित विचार नहीं, वह किसी भी मुकाम पर नहीं पहुँच पाएगा, विशेषज्ञ कहलाना तो दूर की बात है।

"दो नावों पर सवार होने वाला सदा डूबता है। एक नाव का सवार भले ही देर से पहुँचे, मगर सही सलामत दूसरे किनारे पर पहुँच जाता है। इसी प्रकार एक लक्ष्यधारी सदा विजयी होता है मगर जो व्यक्ति हर तरफ हाथ-पैर मारता है, वह कभी किसी काम में सफल नहीं हो पाता है, उसे अधकचरा ज्ञान तो कई विषयों का हो जाता है, मगर वह पूर्ण ज्ञाता किसी भी विषय का नहीं हो पाता है।"

यदि आपको आगे बढना है, असंभव को संभव कर दिखाना है, तो आपको अपने लिए एक मार्ग चुनना होगा, आपको एक लक्ष्य निर्धारित करना होगा और फिर अपनी पूरी शक्ति और योग्यता उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए लगानी होगी, तब निश्चय ही आपको सफलता प्राप्त होगी।वह व्यक्ति जिसका कोई उद्देश्य नहीं होता, वह किसी भी क्षेत्र में अपना प्रभाव नहीं छोड़ सकता। आज के इस प्रतिस्पर्धा से भरे युग में ऐसे व्यक्ति के लिए कोई स्थान नहीं। असफला का मुख्य कारण व्यक्ति का अस्थिरचित्त होना ही है। किसी एक लक्ष्य पर दृद न रहना एक अवगुण है। आप जितनी जल्दी इस अवगुण से छुटकारा पा लें, उतना ही अच्छा है। इस अवगुण के कारण असफल हुए व्यक्तियों की संसार में कोई कमी नहीं है।

कुछ बनने के लिए केवल इतना ही काफी नहीं है कि आपकी इच्छा वैसे बनने की है, इसके लिए आपको अपनी समग्र शक्ति को एकत्रित कर एक लक्ष्य पर केन्द्रित रहना होगा। यदि आप ऐसा नहीं कर पाते, तो असफलताओं के लिए कोई दूसरा [ईश्वर या भाग्य] नहीं, आप स्वयं ही दोषी होगें।

"हमें ऐसा कोई भी लक्ष्य निर्धारित नहीं करना चाहिए जिसे सम्पन्न करने की रुचि, शक्ति और योग्यता हमारे भीतर न हों।"

सफल उसी को कहते हैं जिसने अपना कोई एक लक्ष्य निर्धारित किया है। हर ओर हाथ-पाँव पटकने वाला व्यक्ति कभी भी सफल नहीं हो सकता। अनेक कामनाएँ करने वाला व्यक्ति कभी भी इतिहास में अमर नहीं हुआ। आखिर आप दो नावों में कैसे सवार हो सकते हैं? यदि कोई ऐसा प्रयास करेगा तो डूबेगा। अनेक लक्ष्य धारण करने वाला व्यक्ति अपनी शक्तियाँ किसी भी स्थान पर एकाग्र न कर पाने के कारण सदा असफल ही रहता है। सफल व्यक्ति वही कहलाते हैं जिनका एक ही और सुनिश्चित कार्यक्रम होता है वे अपने उद्देश्य की ओर ही एकटक देखते हैं और उसी ओर निशाना लगाते हैं। वे अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर सीधे चलते रहते हैं, उस पर डटे रहते हैं अभी और कभी भी विचलित नहीं होते। उन्हें कभी किसी ने डांवाडोल होते हुए न देखा।

स्थिरचित होकर अपनी समस्त योग्यताएं और सम्पूर्ण शक्ति किसी एक लक्ष्य पर लगा देते हैं, उनकी योग्यता और कार्य शक्ति प्रखर हो जाती है। "उनका उद्देश्य और उनकी धारणा ही उन्हें प्रेरित करती है कि वे एकाग्र मन से एक ही ओर जुटें। यह एकाग्रता ही उनकी योग्यता को बढ़ाती है और उनकी शक्ति में अभूतपूर्व वृद्धि कर देती है। बिना लक्ष्य निर्धारित किए अपनी शक्ति और योग्यता का प्रयोग करना, उसे व्यर्थ ही इधर-उधर बिखेरना और कमजोर बनाना है। सफलता के लिए मन को निश्चित लक्ष्य पर ऐसे एकाग्र करें जिस प्रकार कोई तीरन्दाज अपनी दृष्टि को केवल अपने लक्ष्य पर गड़ाए रखता है उसे उस समय दूसरी वस्तु नहीं दिखाई देती।

मनुष्य को शिक्षित, प्रतिभाशाली व अपने में रुचि रखने वाला भी होना चाहिए। सबसे आवश्यक है कि उसका उद्देश्य सुनिश्चित और अटल हो । सब कुछ होने के साथ एक लक्ष्यी और स्थिर बुद्धि वाला होना व्यक्ति के लिए बेहद जरूरी है। किसी एक लक्ष्य के लिए उसमें ऐसी विशिष्ट प्रतिभा होनी चाहिए कि उसका कार्य भीड़ में भी सबसे अलग दिखाई दें, तभी कोई व्यक्ति सफल हो सकता है। अपने लक्ष्य पर चट्टान के समान स्थिर रहिए। अपने कार्य को निरंतर बदलते रहने से आपको जो असफलता हाथ लगेगी, वह आपके लिए घातक सिद्ध होगी।

एक नवयुवक पिछले 5-6 वर्षों से कपड़ों का व्यापार कर रहा था, फिर एकाएक अपने मसाला व्यवसायी मित्रों की सफलता को देखकर उसने भी अपने व्यवसाय को बदल लिया। इसका मतलब यह हुआ कि पिछले 5-6 वर्षों में उसने कपड़े के व्यवसाय का जो अनुभव प्राप्त किया था, उसे उसने दूसरे व्यवसाय में लगकर व्यर्थ कर दिया। अब मसालों के व्यवसाय का अनुभव प्राप्त करने के लिए उसे अगले 5-6 वर्ष लगाने होगें और तब भी कोई गारन्टी नहीं कि वह इसी व्यवसाय में ही टिका रहेगा। हो सकता है 5-6 वर्षों बाद उसे कोई और काम-धन्धा अच्छा लगने लगे। इस प्रकार उसका पूरा जीवन विभिन्न प्रकार के अनुभवों को प्राप्त करने में अवश्य गुजरेगा, मगर सफलता (धन, समृद्धि, यश, कीर्ति) से वह कोसों दूर ही रहेगा। इस प्रकार जो व्यक्ति अपने जीवन का अधिकांश भाग नए-नए अनुभव पाने में लगाता रहता है और पिछला जीवन व्यर्थ करता रहता है, वह हर काम में नौसिखिया ही बना रहता है। वह हर काम को थोड़ा-थोड़ा जान लेता है। मगर पूर्ण ज्ञान किसी का भी प्राप्त नहीं कर पाता। वह बीस व्यवसायों का जानकार होने के बावजूद भी अपना जीवन स्तर अच्छा नहीं बना सकता। वह कभी भी नाम पैदा नहीं कर सकता तथा उसके धनी होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

अनेक युवक किसी एक कार्य में पूर्ण कुशल होने से पूर्व ही हतोत्साहित हो जाते हैं और किसी अन्य कार्य में प्रवृत्त होने की सोचने लगते हैं। मनुष्य को अपने कार्य की कठिनाई जानना उतना सरल नहीं होता। वहां हमें किसी प्रकार की कोई कठिनाई दिखाई नहीं देती।

उदाहरण के लिए एक युवक किसी आई.टी. इंजीनियर को अपनी कार में जाते हुए देखता है तो वह सोचने लगता है कि मैंने जो धंधा अपनाया है, वह बड़ा कठोर और कष्टों से भरा है, मुझे कितना परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु वह यह नहीं सोचता है कि आई.टी. इंजीनियर बनने से पूर्व उस व्यक्ति ने कितने वर्षों तक अध्ययन किया होगा। खाने-पीने, सोने-ओढ़ने और उसने कभी मनोरंजन की ओर ध्यान नहीं दिया होगा। इस प्रकार अपना सुख-चैन त्यागकर वह आई.टी. इंजीनियर बना है। जो आज सुखी है, उसे वह सुख किसी ने प्लेट में परोसकर नहीं दिए बल्कि सुख की उस स्थिति को प्राप्त करने के लिए उसने संघर्ष किया होगा। पचासों मुसीबतें उठाई होंगी।

अतः किसी कामयाब व्यक्ति की बराबरी करने से पहले उसका आज न देखें, उसका अतीत देखें, गुजरा हुआ कल देखें कि उन दिनों में उसने कितने पापड़ बेले हैं जिससे उसे कामयाबी मिली। फिर आपमें यदि हिम्मत हो तो उस रास्ते पर चलें और उस जैसा सफल बनकर दिखाएँ। याद रखें-उन्नति के लिए संघर्ष करना पड़ता है, दुनिया से भी और अपने आप से भी।

"मनुष्य ही एक मात्र प्राणी है जिसके लिए अपना ही अस्तित्व एक समस्या है, जो उसे स्वयं हल करना है।"

बिना विचारे कार्यक्रम बदलना आपके मन की अस्थिरता को प्रकट करता है और यह अस्थिरता ही असफलता का कारण है। इस अस्थिरता के कारण ही आप निराशा के गहरे गड्डे में गिर जाते हैं और असफल होते हैं । आज जब लोग किसी व्यक्ति से मिलते हैं तो पूछते हैं कि आजकल आप क्या कर रहे हैं? इसका सीधा अर्थ यही है कि पहले जब मिले थे तब कोई अन्य काम कर रहे थे तथा अब कोई अन्य काम कर रहे होगें अर्थात आपसे ऐसा पूछने वाला जानता है कि आप अस्थिर बुद्धि है और टिककर किसी काम में प्रवीणता प्राप्त नहीं कर पाते। यदि आपका कोई एक काम है और दृढ़ता से अपने उस कार्य के प्रति समर्पित है तो पूछेगा कि वह काम कैसा चल रहा है? कोई प्रगति हुई या नहीं। अतः स्थिर बुद्धि बनिए। मृगतृष्णा के पीछे मत भागिए। अपने आत्मविश्वास को दृढ़ रखकर अपने काम के प्रति समर्पित रहिए।

दक्षिण अफ्रीका के मैदानों में एक विशेष जंगली फूल होता है, जिसका मुंह सदा उत्तर की ओर रहता है। यदि कोई यात्री रास्ता भूल जाए, उसे दिशा भ्रम हो जाये और उसके पास दिग्दर्शन यंत्र भी न हो तो फूल उसकी मदद करता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति एक ध्येय निश्चित कर लेता है और एकाग्रचित होकर कार्य करता है, वह कठिनाइयों के आने पर विचलित नहीं होता और उनसे संघर्ष करके सफलता के मार्ग पर चलता रहता है। अन्ततः वह विजयी होता है।

इधर-उधर भटकते विचारों को एकत्र कर उन्हें एक दिशा में प्रेरित करना सरल कार्य नहीं है। निरंतर, चिंतन, अभ्यास, त्याग और लगन द्वारा ही इसमें सफलता पाई जा सकती है।

"असम्भव को सम्भव वही कर दिखाते हैं, जो धुन के पक्के हो, जिनकी दृष्टि अर्जुन की भांति चिड़िया की आँख [अपने लक्ष्य] पर टिकी रहती है। अतः अर्जुन बनो, अपना लक्ष्य निर्धारित करो और फिर उस पर से तब तक दृष्टि न हटाओ, जब तक उसे भेद न लो, यही है असम्भव को संभव कर दिखाने का एक मात्र मंत्र ।"

मुख पृष्ठ के बारे में . . .

मयिलाट्टम एक कलात्मक और धार्मिक नृत्य है जो भगवान सुब्रह्मण्य को समर्पित है। यह तमिलनाडु और केरल के हिंदू मंदिरों में प्रस्तुत किया जाता है। मयिलाट्टम नर्तक मोर के रूप में वेशभूषा पहनते हैं और विशेष नृत्य करते हैं। उनकी पोशाक ऐसी होती है कि मोर की चोंच को धागे से खोला और बंद किया जा सके। मयिलाट्टम में जटिल चालें, पैरों में लकड़ी के सहारे संतुलन बनाना और मोर की तरह व्यवहार करना शामिल है, इसलिए इसके लिए गहन अभ्यास की आवश्यकता होती है।

मयिलाट्टम की शुरुआत संगम काल (मदुरै के पाण्ड्य राजाओं के शाही संरक्षण में समृद्ध) से हुई, जो ईसा पूर्व 3वीं सदी से लेकर ईस्वी 4वीं सदी तक था, जो इसके लंबे समय से चले आ रहे सांस्कृतिक महत्व को दर्शाता है।

आंखों की गुस्ताखियां

मुकुंद माधव भारती,डी ई ओ

आंखों की मस्ती में झूमते सभी हैं,
पर आंखों की हया को समझना आसान
नहीं है।

दिल में छुपे हों दर्द तो बयां करना मुश्किल है,
गर आंखों के लहजों को समझो, दिल-ए-
हाल बयां करती हैं।

आंखों की मस्ती में झूमते सभी हैं,
आंख को ही है हंसना, आंख को ही है रोना।
आंखें ही मोहब्बत का इंतजार करती हैं।

बेचैन करती हैं निगाहें दीदार पाने को,
सुकून पल में मिल जाए आहट-ए-यार पाने
को।

तारीफ़ें निगाहें दिल में उतर जाती हैं,
आंखों को जो भाए, वो मन को भा जाती हैं।

आंखों की मस्ती में झूमते सभी,
आंखों के इशारों में बात दिल की कह दी।
आंखों से ही समझ लो, यह बयान क्या कर रही हैं।

भक्त की गरिमा

मुकुंद माधव भारती,डी ई ओ

भक्त, श्रद्धा, और प्रेम की पराकाष्ठा कि कुंजी है , तथा विश्वास का परिचायक है। ईश्वर है या नहीं इस तथ्य की सार्थकता को उजागर कोई कर सकता है तो वो कड़ी कोई और नहीं केवल भक्त ही है। जिस प्रकार नारी के सतीत्व का प्रमाण केवल नारी ही कर सकती है ठीक उसी प्रकार भक्त ही ईश्वर को परिभाषित कर सकता है। ईश्वर को परिलक्षित करने में भक्त की भूमिका अहम मानी जाती है। भक्त यदि चाहे तो वह निर्जीव में भी ईश्वर को साकार भाव देकर उन्हें सजीव बना सकता है। यदि ऐसा नहीं होता फिर मंदिर मस्जिद गिरजाघर गुरुद्वारों में इतनी भीड़ नहीं होती। यह भक्ति की पराकाष्ठा के मूल्यांकन का द्वार है। भक्त श्रद्धा,विश्वास और प्रेम का पर्याय है, यही दृढ़ अवधारणा ईश्वर के होने की प्रमाणिकता की कसौटी है। ईश्वर में प्रेम का होना प्राकृत है,यदि ईश्वर जीव है तो भक्त स्वभाव, यदि ईश्वर सत्य है तो भक्त प्रमाण उस सत्य का, यदि ईश्वर सुंदर है तो भक्त आकर्षण है।विषय यह नहीं है कि ईश्वर है या नहीं विषय तो यह है कि ईश्वर का होना सिद्ध कौन कर सकता है? केवल भक्त।

जिस प्रकार नारी में मां की संज्ञा का होना संतान की उत्पत्ति पर आश्रित है, ठीक उसी प्रकार ईश्वर की सार्थकता भक्त पर आश्रित है। कई साक्ष्य ऐसे हैं जो यह सिद्ध कर सकते हैं कि ईश्वर भक्त के अधीन है। ईश्वर सच्चे भक्त के लिए अपने विधान को बदल सकता है।

प्रबल प्रेम के पाले पार कर, प्रभु को नियम बदलते देखा,
अपना मान टले टल जाए, भक्त का मान ना टलते देखा..

ईश्वर को भक्त की ऐसी चिंता की भक्त के सम्मान की रक्षा हेतु अपने विधान को बदल सकते हैं। सबरी के जूठे बेर खा सकते हैं, सुदामा के चरण पखार सकते हैं मीरा को दी गई विष को अमृत बना सकते हैं, पक्षीराज जटायु को पिता तुल्य सम्मान देकर सद्गति दिला सकते हैं, भक्ति का केवल एक पर्याय है प्रेम, श्रद्धा और विश्वास। महाभारत में एक ऐसा प्रसंग आया जब द्रौपदी कृष्ण से पूछती है कि जब मेरा चीर हरण हो रहा था तब मेरी करुण पुकार पर भी आने में देर क्यों कर दी, तो भगवान कृष्ण मुस्कुराते हुए कहते हैं तुम्हारे करुण पुकार के भाव में ही विलंब छिपा था, तुमने क्या पुकारा-दुख हरो द्वारिका नाथ शरण में तेरी, मैं तो तुम्हारे ही पास था। पर तुमने मुझे द्वारका नाथ कहकर द्वारका

भेज दिया अब द्वारका से आने में जो विलंब हुआ उसमें मैं क्या करूं यदि तुम कहती- दुखरो नाथ शरण में तेरी, तो विलंब होता ही नहीं। इसी संदर्भ में एक और प्रसंग आया कि जब पितामह भीष्म ने प्रतिज्ञा ली थी कि मैं युद्ध में श्री कृष्ण से अस्त्र उठाकर रहूंगा। जबकि भगवान कृष्ण ने भी प्रतिज्ञा की थी कि मैं अस्त्र-शस्त्र नहीं उठाऊंगा परंतु युद्ध प्रारंभ के दौरान अर्जुन युद्ध करने के पक्ष में नहीं था फिर भी भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का ज्ञान उपदेश देते हुए कहा यदि तुम युद्ध नहीं करोगे तो क्या यह मरेंगे नहीं, यह युद्ध धर्म की स्थापना हेतु है यदि तुम अस्त्र उठाकर युद्ध का आरंभ नहीं करोगे तो मैं करूंगा। फिर भगवान श्री कृष्णा अपना सुदर्शन चक्र पितामह भीष्म पर चलाते हैं क्योंकि वह कहते हैं मेरी प्रतिज्ञा का कोई मोल नहीं परंतु भक्त की प्रतिज्ञा का सदैव मान रखना मेरी नियति है, तभी पितामह भीष्म कहते हैं वासुदेव मैं जानता हूं कि यह अस्त्र आपने मेरी प्रतिज्ञा के संरक्षण हेतु उठाया हैं। हे वासुदेव आपको कोटि-कोटि प्रणाम है।

यह है, भक्त की गरिमा का संरक्षण, कृष्ण भगवान अपने द्वारा लिए गए प्रतिज्ञा को तुच्छ समझते हैं। कभी-कभी तो भक्त की परीक्षा भी भगवान इसलिए लेते हैं की भक्त की गरिमा बनी रहे। जिस प्रकार परीक्षा में उत्तम परिणाम से गौरव की अनुभूति होती है ठीक उसी प्रकार भक्त की परीक्षा, भगवान भक्त की उच्च कोटि को सिद्ध करने के लिए लेते हैं, इस संदर्भ में भी एक प्रसंग है कि एक बार सभा प्रशाल (दरबार) में प्रभु श्री राम और माता सीता सिंहासन पर आसीन थी उस सभा प्रशाल (दरबार) में सभी विद्वान गुरुजन - परिजन अपने आसन पर आसीन थे तभी माता सीता ने कहा कि लंका में युद्ध पर विजय का अधिक श्रेय श्री हनुमान को जाता है।

इसलिए हनुमान को इस कार्य हेतु परितोष के रूप में मोती - माणिक और अमूल्यवान माला दिया गया तो भक्त हनुमान ने मोती - माणिक जड़ित माला के दानों को अपने दांतों से तोड़ने लगे तो माता सीता बोलती है, क्या यह पारितोष या उपहार तुम्हें पसंद नहीं? तो हनुमान बोले, माते यह मेरे किसी काम के नहीं है फिर माता सीता बोलती हैं। इन्हें तोड़ क्यों रहे हो भक्त? हनुमान बोलते हैं माते मैं इन मोती – माणिक जड़ित माला में आपका और प्रभु राम की छवि देखना चाहता हूं। तो माता बोली प्रभु की छवि का वास हृदय में होता है क्या तुम्हारे ह्रदय में प्रभु की छवि है? तभी सभा की ओर से आवाज आई-क्या जिस प्रकार तुम मोती माणिक की माला तोड़ प्रभु की छवि देख सकते हो, तो संभव है माता ने जो हृदय में प्रभु की छवि की बात कही, तो क्या तुम हृदय फाड़ डालोगे? इतना सभा जन को बोलने मात्र था कि भक्त प्रवर हनुमान जी ने अपनी वक्ष स्थल को फाड़ डाला और प्रभु श्री राम एवं माता सीता की कृपा से सभा में उपस्थित सभी लोगों को अपने हृदय में प्रभु राम एवं माता सीता की छवि को दिखाई। उस सभा में सभी चकित हो गए उसी में प्रसंग आया है

सीता जी ने मणि माला दी, तोड़ के माला बिखरा दी।
निज हृदय फाड़ सीता राम दिखाने वाले , राम के भक्त निराले॥
राम के भक्त निराले – 2, राम सिया राम जय जय राम सिया राम

ऐसे कई उदाहरण है जहां भक्त की गरिमा का संरक्षण निर्वहन स्वयं ईश्वर करते हैं। भक्त प्रहलाद के लिए प्रभु नरसिंह अवतार लेते हैं ध्रुव की भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें अपने गोद में बिठाते हैं इसलिए कहा जाता हैं।

राम ते अधिक राम कर दासा

राम से भी अधिक महिमा राम के दास की अर्थात भक्त की है, और ऐसा क्यों, क्योंकि ईश्वर भक्त की प्रशंसा में स्वयं कहते हैं।

मेरे कारण छोड़ जगत के भोग पदारथ सारे।
मैं भक्त के पीछे जाऊं जहां- जहां भक्त पधारे॥

जो भक्त मेरे कारण संसार के सभी भोग ऐश्वर्या छोड़कर केवल मेरी भक्ति में लगे हैं, तो मैं भक्त की गरिमा को खंडित नहीं होने दूंगा मैं तो सदैव भक्त के पीछे-पीछे चलूंगा। यदि ईश्वर मंजिल है तो भक्त पथिक हैं।

कबीर कुत्ता राम का मोती मेरा नाम।
गले राम की जेबरी जीत खिंचे ताह जाए॥

कबीर साहेब कहते हैं, मैं राम का कुत्ता हूँ, अर्थात मैं राम का भक्त हूं, मोती मेरा नाम हैं, राम नाम का गले में पट्टा बंधा हूं और प्रभु श्री राम जहां कहेंगे वाहा जाऊंगा

महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I)
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II)
O/o PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL)
तत्वावधान में/UNDER THE
हिन्दी दिवस
HINDI DAY

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I)
O/o PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II)
O/o PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
O/o DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL)
के
CELEBRA